आधुनिक पर्यावरण समस्या का वैदिक समाधान

प्रतिमा खटुमरा
सहायक आचार्य–हिन्दी
सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय ब्यावर

धानॉ लेखीरन्तरिक्ष मा हि सीः पृथिका संभर्व
अयं हित्वा स्वधिं तिस्ते तिंजनः प्राणितापं पहते सौभागाय।
अतस्त्वं देवं वनस्पते शतवल्सो
विरोह सहसंवल्षा विवयं रुहेम।।

–यजुर्वेद

पर्यावरण जीव जगत का आधार अर्थात जीवन का स्त्रोत है जो पृथ्वी पर अनादिकाल से मानव, जीव–जन्तु और वनस्पति को आधार प्रदान कर रहा है। मानव पर्यावरण संरचना के जैविक घटक का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। प्रकृति ने मानव को अनूठी प्रतिभा, क्षमता, सृजनशीलता एवं तर्कशक्ति देकर विवकेशील, चितनंशील एवं बुद्धिमान प्राणी के रुप में बनाया हैं मनुष्य को अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए पर्यावरण एक वरदान के रुप में दिया गया है। प्राचीन समय में पर्यावरण अध्ययन, अध्ययन का गौण पक्ष रहा है क्योंकी उस समय जनसंख्या कम थी। प्रकृति से सामंजस्य था, प्राकृतिक संसाधनों का सन्तुलित चक्र बना हुआ था। भारतीय संस्कृति का अध्ययन किया जाये तो वैदिक संस्कृति में मानव–प्रकृति की पूजा व उसके संरक्षण में उपर्युक्त समस्याओं का उद्‌भव नहीं हुआ था। परन्तु आज भौतिकवादिता की अंधी दौड़ ने और औद्योगीकरण ने मानव को स्वार्थी बना दिया है। मानव ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अधिकाधिक संसाधनों का दोहन, नवीनतम तकनीकों का उपयोग, रसायनों का उपयोग, नगरीकरण आदि से पर्यावरणीय संकट की स्थिति उत्पन्न कर ली है।

इन समस्याओं के निराकरण हेतु मानव को पुनः वेदों की ओर लौटना होगा। जिनमें प्रकृति व मानव के संतुलन पर सर्वाधिक जोर दिया गया है तथा उनमें प्रतिपादित नियमों व प्रावधानों का कठोरता से पालन करना होगा तभी मानव जीवन पुनः सुखमय बन सकेगा विष्व के प्राचीनतम ग्रन्थ वेद में मन्त्रद्रष्टा ऋषियों ने हजारो वर्ष पूर्व उपर्युक्त तथ्य का दर्शन कर लिया था। वैदिक संहिताओं में पर्यावरण की शुद्धि के लिए वन वृक्षों एवं वनस्पति को उपयोगी मानते हुए उनके महत्त्व का निरुपण किया गया है। वैदिक संस्कृति में प्रत्येक शुभ अवसर पर यज्ञ को अनिवार्य दैनिक कर्त्तव्य स्वीकार किया गया है। ऋषिगणों ने प्रकृति में होने वाले विकार की मात्रा को दृष्टिपथ में रखते हुए उन्होने यज्ञ की मात्राओं को भी निश्चित कर लिया था। फलतः दैनिक, पाक्षिक, मासिक, चार्तुमासिक, षण्मासिक वार्षिक इत्यादि यज्ञों का समायोजन कर लिया गया था। समय–समय पर आयोजित होने वाले इन यज्ञो से प्रकृति की शुद्वता, वर्षा की प्रचुरता, अन्न की उत्पत्ति इत्यादि कर्म व्यवस्थित होते रहते थे। इसी भाव को स्पष्ट करते हुए गीता में कहा गया हैं–

"यज्ञाद भवति पर्यन्यों पर्जन्यादन्नसम्भवः"

वेदों में जहाँ विश्व के लिए जीवन उपयोगी अन्य वस्तुओं का निर्देश किया गया है। वहीं वृक्ष,वनस्पति, औषधि, लता एवं वनों का भी सम्मानपूर्वक उल्लेख मिलता हैं। वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण की दृष्टि से इनका महत्त्व स्वीकारते हुए इन्हें श्रद्धापूर्वक नमस्कार करते हुए कहते हैं।–'नमो वृक्षेभ्यः' इतना ही नहीं वृक्ष, वन एवं औषधियों का संरक्षण करने वालो को वह 'वनानां पतये

नमः' तथा 'औषधीनां पतये नमः' कहकर नमन करते हैं। ऋषि इस तथ्य को भली भाँति जानते थे कि वृक्ष एवं लताएँ आदि जहाँ अपने फल,फूल एवं लकड़ी आदि द्वारा समृद्धि प्रदान करते हैं। वहाँ दूसरी और शुद्ध एवं प्राणदायक वायु द्वारा पर्यावरण को भी माधुर्य गुणयुक्त बनाते है। इसीलिए ऋग्वेद में कहा गया है कि वृक्ष प्रदूषण को नष्ट करते है। अतः उन्हे नहीं काटना चाहिए। वृक्षों एवं वनस्पतियों के सम्पर्क से वातावरण को प्राणवान एवं मधुमय बना देने वाले वायु को एक मंत्र में विष्भेषज कहा गया है और प्रार्थना की गई है कि वह दूषित वायु को दूर करे तथा शुद्ध वायु 'भेषजवात' को प्रवाहित करे–'अग्निः कृणोतु भेषजम्' वेद में वर्णित इस जीवनदायक भेषजवात के मूलस्त्रोत वन एवं वृक्ष है जिनके महत्त्व का वेदमंत्रों में वर्णन प्राप्त होता है। पर्यावरण की दृष्टि से वृक्षों के महत्त्व की वैदिक मान्यता बाद के लौकिक संस्कृत साहित्य में भी दृष्टिगोचर होती है। कालिदास ने 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' में वृक्षों की चेतनता को जिस स्नेहिल भावना से अभिव्यक्त किया है। वह उस समय के पर्यावरण चेतनता का सर्वोत्कृष्ट स्वरुप प्रस्तुत करता हैं। वृक्षों को पुत्र रुप में प्रतिष्ठा तथा इससे भी अधिक उनके प्रति कृतज्ञता एवं श्रद्धा का भाव प्रायः प्रत्येक पुराण में मिलता है। अनेक स्थानों पर विंककत, पलाश व उदुम्बरों का उल्लेख आया है। वैदिक कर्मकाण्डों में दूर्वा का सर्वाधिक प्रयोग माना गया है। इन पेड़ों में चेतन तत्त्व माना गया है। बादरायण ने भी वृक्षों के अभिमानी देवता की सत्ता को स्वीकार किया है। इसी के आधार पर जगदीश चन्द्र बशु ने वृक्षों में चेतन तत्त्व की सत्ता का प्रतिपादन किया हैं। यज्ञ में पीपल, वट चन्दन आदि वृक्षों की लकड़ियों की आहुति दी जाती है, जिससे वातावरण शुद्ध होता है। वृक्षों की इसी महत्ता को दृष्टिपथ में रखकर इसमें देवताओं का निवास माना गया है तथा इनको न काटने पर बल दिया गया है। आज भी भारतीय संस्कृति में वट, पीपल, आंवला आदि वृक्षों का पूजन करने का यही अभिप्राय है कि ये मानव जीवन की रक्षा करते है। हिन्दु धर्म में प्रत्येक घरों में तुलसी का पौधा लगाने की सलाह दी गई है जिसका वैज्ञानिक कारण यह है कि तुलसी का पौधा ही संसार का एकमात्र ऐसा पौधा है जो दिन तथा रात दोनो समय ऑक्सीजन छोड़ता है। तथा उसकी पत्तियाँ प्रकाश संश्लेषण द्वारा सर्वाधिक मात्रा में सौर ऊर्जा शोषित करती है। फलतः ऋषियों ने जन–मानस में इस धारणा को बल दिया कि तुलसी में लक्ष्मी व विष्णु दोनो का निवास है। ये पौधे वाष्प विसर्जन द्वारा वातावरण में नमी बनाये रखते है। जिससे कि समय–समय पर वर्षा होती रहती है तथा मृदाक्षरण भी नहीं होता है।

वेदों में पर्वतों का बहुत महत्त्वपूर्ण वर्णन किया गया है। पर्वत खनिज के बहुमूल्य स्त्रोत है। पर्वत पृथ्वी का सन्तुलन बनाये रखने मे भी महत्त्वपूर्ण कारक माने गये है। ऋग्वेद में वर्णित किया गया है कि पर्वत शुद्ध वायु देकर मृत्यू से रक्षा करते हैं। अतः पर्वतों से रक्षा की प्रार्थना का उल्लेख मिलता है।

वैदिक मान्यतानुसार पर्यावरण की शुद्धि का सर्वोत्तम साधन यज्ञ को माना गया है। यज्ञ को वैदिक संस्कृति का अभ्नि अंग माना जाता है। वर्तमान समय में मानव यज्ञ को धार्मिक कर्मकाण्ड का अंग मानता है किन्तु वास्तविकता पृथक ही है, वस्तुतः हमारे ऋषिगण सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक थे। उन्होंने प्रकृति में निरन्तर सम्पद्यमान मानव–कृत विकारों को दूर करने के हेतु ''यज्ञ'' की स्थापना की। भौतिक दृष्टि से यज्ञ वह अग्निहोत्र है जिसके अनतर्गत घी एवं साम्रगी की आहुतियां पवित्र वेदमंत्रों का उच्चारण करके अग्नि में दी जाती है और अग्नि में डाले गए उक्त द्रव्यों को अत्याधिक शक्तिशाली बनाकर वायु, जल–पृथ्वी एवं अन्तरिक्ष में पहुँचा देता है। जिससे वातावरण शुद्ध, पवित्र, सुगन्धित, प्राणदायक एवं स्वास्थ्यप्रद हो जाता है। यज्ञ से उत्पन्न धूम्र से नाइट्रोजन व अमोनिया उत्पन्न होकर वातावरण को शुद्ध करती है तथा घण्टावादन क्रिया के द्वारा उत्पन्न शब्द भी विषाणुओं का नाश करता है। सन्धिकाल के समय मन्दिरों में होने वाले घण्टानाट का यही रहस्य है कि अत्यधिक गतिशील, विषाणुओं को तीव्र शब्द द्वारा नष्ट किया जा सके। वैदिक ऋषियों ने यज्ञ को जन सामान्य में और अत्यधिक लोकप्रिय बनाने के लिए षोडष संस्कारों को द्विजों के लिए अनिवार्य कर दिया है। ये संस्कार यज्ञ के माध्यम से सम्पन्न किये जाते थे। ''यज्ञो

वे श्रेष्ठम कर्म'' कहा गया है विदेशों में विधिपूर्वक यज्ञोपर अनेक अनुसंधान हो रहे है। पाष्चात्य विद्वानों ने इन याज्ञिक क्रिया–कलापों से अनेक आश्चर्यजनक आविष्कार करके विश्व को हतप्रभ कर दिया है। वैदिक साहित्य में वर्णित वन सम्पदा एवं यज्ञ आदि के अनुरुप अपनी दैनिक वैदिक संहिताओं में पर्यावरण की शुद्धि के लिए वृक्ष एवं वनस्नतियों तथा यज्ञ को पर्यावरण के लिए सर्वाधिक प्रभावशाली व सर्वोत्तम साधन के रुप में स्वीकार किया गया है। इसीलिए हमारे वैदकि मंत्रों में पर्यावरण को संरक्षित बनाये रखने के लिए कहा भी गया हैं–

ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुच्यते।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावषिष्यते।।

निष्कर्षः– पर्यावरण एक विरासत है हमारा वर्तमान, भविष्य एवं हमारा अस्तित्व सभी कुछ तो इस पर निर्भर है। आज के पर्यावरणवेत्ता केवल भौतिक दृष्टि से जल एवं वायु, ध्वनि, भूमि के प्रदूषण को दूर करने के उपाय खोजने तक ही सीमित रह गए है। पर्यावरण संतुलन के लिए हमें आज विभिन्न घटकों– वायु, जल, भूमि वन, वातावरण, नागरिक स्वास्थ्य, ऊर्जा, जीवन–संपदा, राज्य, समाज, जीव–जंतुओं एवं वनस्पति का समग्र रुप से परस्पर समन्वय करने हेतु गंभीरता से चिंतन एवं मनन करने की महती आवश्यकता है। वेदमंत्रों में व्यक्ति के मानसिक, वाणी एवं चारित्रिक शुद्धि के लिए भी दिव्य प्रेरणा प्रदान की थी। इस प्रकार सार्वभौम मानव संस्कृति के आदि स्त्रोत वेदों में भैतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से पर्यावरण की शुद्धि के ऐसे साधनों का विधान किया गया है जिन्हे अंगीकृत कर संसार में एक सुखी एवं आनन्दमय वातावरण बनाया जा सकता है।

संदर्भ पुस्तकें:–

पर्यावरण अध्ययन– पी.सी त्रिवेदी, 2007 आविष्कार पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर

संसाधन एवं पर्यावरण– डॉ. रामकुमार गुर्जर, डॉ.बी.सी. जाट, 2006 पंचशील प्रकाशन, जयपुर

मानव एवं पर्यावरण– डॉ. एच.एम.सक्सेना, 1999, कुलदीप पब्लिकेशसन्स, जयपुर

पर्यावरण प्रबन्धन एवं विकास– रामकुमार गुर्जर, 1997 आविष्कार पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर

पर्यावरण अध्ययन– डॉ. वन्दना शर्मा, श्रीमती सुलेखाजोशी, 2006 रोहिणी बुक्स प्रकाशन एवं वितरक, जयपुर

पर्यावरण और प्रदूषण– वी.पी.सती 2007 प्रेमचन्द बाकलीवाल आविष्कार पब्लिकर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर

यजुर्वेद,

गीता,

अथर्ववेद